स्वतन्त्रता प्राप्ति और फलितार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत देश आर्यों का देश है। यहां पर आत्मा, परमात्मा, कर्म, जीव और जगत की चर्चा अनादिकाल से होती रही है। बहुत से अनार्य देश हैं, जहां पर इन सबका चिन्तन नहीं होता। इस देश में जन्म लेकर महापुरुषों ने मानवता का कल्याण किया। इसे धर्म गुरु देश कहा जाता है। प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। यह देश धनधान्य से परिपूर्ण था। यहां कि सम्पन्नता को देखकर व्यापार वाणिज्य करने आयी विदेशी शक्तियां धीरे–धीरे अपना प्रभुत्व जमाने लगीं और राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित कर यहां पर शासन करने लगी। शक, हूण, कुषाण, यवन, मुगल और अंग्रेजों ने कई शताब्दियों तक यहां पर शासन किया। विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत देश की संस्कृति और सभ्यता को नष्ट कर सामाजिक वातावरण को नष्ट करने का प्रयास किया किन्तु उसमें सफलता नहीं प्राप्त की। भारत के धन धान्य को लूट कर वे अपने साथ ले गये। किन्तु भारतीय आत्मा अप्रभावित रही। जब भारतीयों में चेतना जागृत हुई तब यहां के राजनेताओं ने अहिंसात्मक ढ़ंग से विरोध कर विदेशी शक्ति को भारत से निकाल फेंका और भारत देश स्वतन्त्र हुआ। भारत का संविधान बनाया गया। प्रजातन्त्रात्मक ढ़ंग से शासन किया गया।

प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति से शासन की नीवं रखकर के जनता के कल्याण के लिए योजनाएं बनायी गई। धीरे–धीरे भारत विकास के मार्ग पर आरूढ़ हुआ। भारत का लोकतन्त्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। हर पांच वर्ष के पश्चात् यहां पर चुनाव होता है। जो दल चुनाव में विजयी होता है वह शासन करता है और जो दल पराजित होता है वह विपक्ष की भूमिका अदा करते हुए सत्ता रूढ़ दल को आईना दिखाने का कार्य करता है। जिन शहिदों के बलिदानों से आजादी प्राप्त हुई उन शहिदों को नमन करना, उनको आदर पुरुष मानना हमारा कर्त्तव्य है। उनके दिखाये हुए मार्ग पर चलकर राष्ट्र को मजबूत बनाना भारत वासियों का कर्त्तव्य है। धीरे–धीरे विकास के साथ–साथ कुछ बुराईयां भी हमारे देश में आ गयी। भ्रष्टाचार,

भाई भतीजावाद, जातिवाद, आतंकवाद इत्यादि बुराईयों को क्षुद्र स्वार्थों के कारण आज बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रजातन्त्र में इन बुराईयों के लिए कोई स्थान नहीं है। भारत में बहुदलीय व्यवस्था है। बहुदलीय व्यवस्था में अनेक दल चुनाव में भाग लेते है। अनेक दलों की राजनीतिक सोच राष्ट्रिय सोच न होकर क्षेत्र विशेष तक सीमित होती है। ऐसे दल अपने संकुचित सोच के कारण क्षेत्रीयता को बढ़ावा देते है जिससे राष्ट्रवाद की भावना कमजोर होती है। ऐसे दल राष्ट्रहित का चिन्तन नहीं करते। जो मूल्य संकुचित सोच के कारण गिरते जा रहे हैं, उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। भारत में अनेक जातियों, धर्मों, मतमतान्तरों, भाषाओं, सांस्कृतिक, भौगोलिक विभिन्नताओं और साम्प्रदायिक मान्यताओं वाले लोग रहते है। इतनी विभिन्नता के होते हुए भी यहां के लोगों की इतनी सुन्दर भावना है कि किसी भी प्रकार का खतरा आने पर सब एक हो जाते है।

भारत की अधिकांश जनसंख्या गावों में निवास करती है, जिनका मुख्य व्यवसाय खेती करना और पशुपालन है। गावों में करुणा, सहानुभूति और मैत्री का ऐसा सुन्दर वातावरण दिखाई देता है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। भारत में एकता का सबसे बड़ा प्रमाण यहां की मानवीयता है। मानव–मानव में यहां कोई भेद नहीं है। विभिन्नता में एकता के कुछ ऐसे चिंतन बिन्दु यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनका उद्देश्य मानवीय एकता के सूत्र हैं। मानवीय एकता क्या है? क्यों आज इसकी आवश्यकता पड़ी है? एकता पैदा करने वाले सूत्र क्या है? इसे समझने के लिए मानव को समझना पड़ेगा। मानव एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य समाज में रहता है। समाज से बहुत कुछ प्राप्त करता है। समाज से आदान–प्रदान, भाईचारा, सौहार्द, सहानुभूति, समता, उदारता से रहना उसका कर्त्तव्य है। समाज में किसी का शोषण न हो। राष्ट्र निर्माण में सबका योगदान हों जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। भेद–भाव की खांई को समाप्त करने के लिए सबको मिलकर के प्रयास करना चाहिए। जन्म के समय सभी समान होते है, किन्तु पैदा होने के बाद सम्प्रदाय की छाप लगा दी जाती है। यह सम्प्रदाय ही एक ऐसा तत्व है जो मानव–मानव में भेद कर देता है। जन्म के समय बच्चा कोरे कागज के समान होता है। परिवार और समाज में जो सीख उसे दी जाती है वह वैसा ही बन जाता है। हिन्दू परिवार में जन्मा हुआ बच्चा हिन्दू संस्कारों में पलता है और मुस्लिम

समाज में पैदा हुआ बच्चा मुस्लिम संस्कारों से पलता–पुस्ता है। इसी प्रकार जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई परिवारों में जन्म लेने वाले बच्चे धर्मानुकूल सामाजिक वातावरण में बड़े होते हैं। सम्प्रदाय भेद पैदा करता है और धर्म एकरूपता दिखलाता है। मानवीय एकता का प्रबल धागा कभी टूटता नहीं। हर प्रान्त का रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, लोक–नृत्य, त्यौहार और व्रत अलग–अलग है। सांस्कृतिक विभिन्नता होते हुए भी भारत महान् है। मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद होने वाले वीरों की गाथाएं यहां के लोगों के जुबां पर रहती है। यही भारत के लोकतन्त्र की मजबूती है। लोकतन्त्र लोगों का तन्त्र है। इस शासन पद्धति में मूल इकाई जनता होती है। जनता के कल्याण के लिए सभी दल प्रयास करते हैं। इस पद्धति में लोगों की भावना का विशेष महत्व है।